

[illegible]

ॐ हिनं नमः ॥ योगेश्वरं नमस्कृत्य ॥ ॐ ह्रीं कृ. विष्णुदा. गजाविष्णुदा. ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ ह्रीं निष्कामानां निर्मलं ॥ ॐ गता जगत्त्रयं विकर्मयावक ॥ ॐ ह्रीं निष्काम
 न ॥ न्यासाद्यैराष्ट्रजात्मपूजा ॥ ॐ यद्वा ॥ यन्निष्काम ॥ ॐ मानसावक ॥ ॐ यत्तयनं ॥
 ॐ त्वामिदं रुवांसं सातो वाजस्यकायव ॥ त्वामिदं विन्नसत्यनिन्नयत्वाकाष्ठं सर्वतः ॥ ॐ
 त्वयर्न ॥ ॐ न त्रायामि ॥ जगत्कलौ गयगाष्ट्रिणी ॥ ॐ जगत्तदकिंल वकिंलनयमि
 मे यत्तिमनसं ॥ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल वक्तव्यं ॥ ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल
 जायते तुमधाम ॥ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल वक्तव्यं ॥ ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल

गीविचद्वध ॥ ॐ सदसस्यनिमज्जं प्रियमित्तस्यकायसाय ॥ ससितक्षमयासि
 मिष ० स्वाहा ॥ नक्तक्षमयत्ति ॥ वीरुयत्तिमति ॥ वीरुविष्णुयर्न ॥ ॐ दवस्यवा
 ॥ ॐ गतासर्न ॥ ॐ गतासिष्टतासर्न ॥ ॐ हिल्यवत्तिमिवागीधवीलक्ष्मीयजर्न ॥ ॐ ह्रीं
 न्यानासुनिका ॐ निक्षया ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल वक्तव्यं ॥ ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल
 मानिय ॥ ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल वक्तव्यं ॥ ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल वक्तव्यं
 क्रिय ॥ ॐ ह्रीं देवायमिगताजगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल वक्तव्यं ॥ ॐ जगत्तदयत्तिमावर्षादकिंल

[illegible]

धियमय २॥ ॐ वायवधं जरुसायवनाधियमय २॥ ॐ कूवनायगया रुसायवना
धियमय २॥ ॐ ष्ठीमानायगिगूलरुसाय सर्वरुगाधियमय २॥ ॐ जू धीय विष्णु वयव
रुसाययानालाधियमय २॥ ॐ उड्डियवक्त (७) कमलुलु रुसाय स्वर्गाधियमय २॥
ॐ स्वर्गाय २॥ ॐ मर्याय २॥ ॐ यानालाय २॥ ॥ हंसनिधका मं ॥ न की डौ काय
॥ न की रुष्मी रुद्राय ॥ ॥ ॐ नयारुद्र वयनि मून सर्वाः पूर्वोक्त जान ४ सब गुरु
जु ४॥ सन वजान ४ सज नि नि क्रमाने प्रत्यं जनानातिष्ठति सर्वनाम स्व ॥ ॐ गि

रुमायुषामदयावर्षमायुजयाय शुनिःवक्रवर्षस्य समि ८५ जी वयुगाममावार्थमि
धाममरुसानाकवर्षयसस्वीनजस्वीवक्रवर्षस्य नोदाहृत्यास ० स्वाहा ॥ ३ ॥ जूनि
ययुक् ॥ यनः सि हा का दय ॥ उँ जूयय शु व नि ॥ ज ॥ जूनि ययुक् ॥ उँ वं न वं व नि ॥
उरुवाद्यावर्ष ॥ वूंद मित्यायत्याग ॥ ननः व क हा म ॥ उँ जूयय स्वाहा ॥ वूंद मयय ॥
उँ सामाय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ जूयय मय स्वाहा ॥ वूंद मयिषा माया ॥ उँ शु कय क वू
त्यायि स्वाहा ॥ वूंद ॥ शु ० या ॥ उँ वृष्य य क वू न्यायि स्वाहा ॥ चिनकाया ॥

उँ जूयय जिह्वा सि मृदु व वृष्या धाम धाम मरुवयश्व यश्व स्वाहा ॥ नना जिह्वा हा
मी ॥ उँ हिव धाय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ वनकाय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ वकाय स्वाहा ॥ वूंद
उँ वृष्याय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ सुयुगाय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ जूनिनकाय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ म
ववृष्याय स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ सकन जूयय समिध सक जिह्वा स क मययः सक धाम
प्रिया नि सक हा नाः सक धात्राय जनी सकया निरा य हा स्व दृगुन स्वाहा ॥ वू
निसक जिह्वा हाम ॥ ॥ नन क्रियव हाम ॥ उँ व स्वाहा ॥ वूंद ॥ उँ रुवः स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं स्वः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ॥ उँ ह्रुवः स्वः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ तता यश्च वायू णि रा उँ न ना
ज्ज्वल्य वनूलस्य विद्वान् देवस्य रुद्रा ज्ज्वला मिमीक्षा ४। य जिष्ठा वक्त्रि तमसा गुयजा विष्णो
दुष्ट्या ० धियमू ग्य सास्त्रो हाना ॐ द म प्रिया माह्या त्याग ॥ उँ सवे न्ना ज्ज्वल्य वमा रूपा की न दि
ष्ट्या ज्ज्वल्या डय सा व्युष्ट्या ॥ ज्ज्वलय क्र (१) वनूल ० नवा (१) वीहिन्त की क ० सु ह वा न न
वि स्वाहा ॥ ॐ म प्रिव नू ला ह्या त्याग ॥ उँ ज्ज्वया श्चा (१) स्य न रि सक्ति या श्च सह सिद्ध
मया ज्ज्वसि । ज्ज्वया माय रू व हा स्य या मा (१) हि रु व ज ० स्वाहा ॥ ॐ द तया श्चा (१) ॥ उँ

[illegible]

[illegible]

हा ॥ उँ नमः स्वाहा ॥ उँ वरुणाय स्वाहा ॥ उँ वायवे स्वाहा ॥ उँ ॐ नमः
 स्वाहा ॥ उँ अथ स स्वाहा ॥ उँ उड्याय स्वाहा ॥ ॥ सर्वथा ददुः स्वाहा ॥ ॥
 उँ सुखं दिविर्गि ॥ दृगाद्रुति दूरु ॥ ॥ नमः तिलाद्रुति कायय ॥ उँ वक्र
 स्वाहा ॥ यदीत ॥ वद ५ ॥ लोकाया ल ॥ कलसाय ॥ नाग ॥ यद यद नी ॥
 शीलक्षी ॥ रिदवना ॥ स्रमकु ॥ तिलाद्रुति दू दया ॥ दूरुदथाति दूरु ॥
 तिलाद्रुति ॥ ॥ विष्टया द्रुति ॥ उँ वक्र स्वाहा ॥ ३ ॥ उँ वक्र यदीत ॥
 उँ वक्र स्वाहा ॥ यदीत ॥ वद ५ ॥ लोकाया ल ॥ कलसाय ॥ नाग ॥ यद यद नी ॥

ॐ मय मययः पुतिहिताः मनीनेसम निद कि स दम यमादम। सकायः स्थक ला क म। यस्तु क जा ग मा अ स्व प्र जो स उ म दो न द यो ॥ २

ॐ विष्णु वसुधादा ॥ १ ॥ ॐ ॐ द मि व ॥ ॐ ॐ व दाय सुधादा ॥ ३ ॥ ॐ नमः समुवाय
ॐ सुयक मय य सुधादा ॥ ॐ मयक मय य ॥ ॥ नमादः यमिन ॥ सुय ॥ ॐ आकृ
क ॥ ग ॥ ॐ ग ल ना स्वा ॥ ॐ ॥ ॐ नमा व दू ॥ य ॥ नाग ॥ ॐ नमा सु स य ॥ नाग
यल ॥ ॐ विष्णु व वाट ॥ इ न म ॥ ॐ नी वी धा यान ॥ ॐ ॥ ॐ नमः समुवाय ॥ मा
न रे व ॥ ॐ अ म र या ना ॥ ग ॥ ॐ ग ल रु ॥ ॐ नि ख व ना य ल ॥ ॐ स द म डी य
क मा न ॥ ॐ उ द रु क न्द ॥ मा न थ वी ॥ ॐ दि व व व लु ॥ द थु ना क ॥ ॐ ग ल ना

वा ॥ नि न थ व ॥ ॐ सि वा मि वि ॥ य थाली य ॥ ॐ जि वा ना म ॥ ॐ स म द द वा ॥
मी म ॥ ॐ नमः स ग व ॥ मा न क मा न ॥ ॐ ॐ म म वि व ल ॥ शी व ग ॥ ॐ आ कृ
य वा अ नि ॥ ॐ अ मि स यि ॥ धा का ली स ॥ ॐ नमः स ग व ॥ व ग व द ॥ ॐ उ द रु
उ व म द ॥ ॐ ॐ म म व व ल ॥ थं थ ॥ ॐ सि वा मि वि ॥ ॐ स म द द वा ॥ का थ ॥
ॐ जा न व द स ॥ व थ थ व ॥ ॐ नमः समुवाय ॥ वि या य ति ॥ ॐ दि व व व लु ॥
द द म द ॥ ॐ वि श्व न थ व ॥ गृ ह ल द ॥ ॐ शी थ न ॥ ना ज ॥ ॐ ना ज न म थ

६ विष्णुः शून्यो विनायकः महिम्नः वदति यथावत् ॥
यज्ञा ॥ उं यज्ञाय ॥ धवग ॥ उं वननदीक्षा ॥ सौम्यदूति ॥ उं अर्चयामा ॥ सायादूति ॥
उं योऽष्टाङ्गि ॥ धृष्टिकादूति ॥ उं शुभार्क ॥ वीदिदाम् ॥ यवध्यानादि ॥ ॥ अग्निग
यनी ॥ उं वेष्टानवायनि ॥ उं यूष्मदध्यानि यूष्मि ॥ ॥ उं आध्यायस्य नि ॥ आर्चयामा ॥
उं मन्त्रार्थ ॥ उं मन्त्रार्थ ॥ उं मन्त्रार्थ ॥ उं मन्त्रार्थ ॥ उं मन्त्रार्थ ॥ उं मन्त्रार्थ ॥
व उरु विष्टियत्रियुर्मन्त्र ॥ साधुकरुणमयायमम् ॥ अस्मन्नादीर्गयादि ॥ उं न
भादग्रथा ॥ उं मन्त्रार्थ ॥ यद्ययथायद् वयवयद ॥ सामथर्थाय रुक्मिणुकायार्थो हि सीतल
०१ यवध्यानादि ॥ साधुकरुणमयायमम् ॥ अस्मन्नादीर्गयादि ॥ उं न

उत्तीरुलडावप्रिगुठुयादिरिरुलुणिकडा नूयकडालयद्वर्षीगलसंमसुव(व्वनरिउउकगिल
तयाथवदनवाद्रुतवदथाथ। मयरीयस्यगर्गनयनमूयनिवद्रुगम(थेदवा
विक्रयुक्तमूर्तिगवद्यगिवदभयरुद्रयीववालीन। वेका७ कृतिवृक्षरियथयदग
तामिनिधवाणिमण, वरिठुद्राथयलवा विदूधयदगद्य तासिनिवर्गयुसिद्धा। तावृष्य
वातदृष्टावगिरुवगलारिगिका वयुधाध थदासागस्यार्थजयगुजययदानि
नित्यवृयाडिर्विगमा। श। सनसनिर्लीगलं मूद्रुतिनी विध्वंसायादयावाजानवयवि
यावयवुवमूधधममिगामर्षदा। कालेसनतिवर्षिभाउलमूव४सनुयडा यूधदामे
गंगपूष्य पिय ६ ७ ८ ९ लसनुन वृद्ध मल्लन्ध मूज रुले ताम्बूरचक नदूवा कानद

दक्षिणवृद्धिवावसुद्ध ७८ गा। श्रीयभाकासदा ॥ ॥ नृगति ४ सर्वरुगानी
 सृष्टिगर्वववावव । अन्तःश्रवणरुगानी दृष्टाव्यवभस्यव ॥ कस्मिन्
 मनसावावावकानान्यागतिर्मम । मेरुदीर्नकियादीर्न रुकिदीर्नतथेवव
 उयहामावनादीर्न कृतीनिर्णययागव । अकृतम्यावदीर्नव गत्यववद्वगाम
 नशा अगुगधादि ॥ ॥ ॐ गा म्रस्य १ गागुगा ग्रीहा ल्यकावद्वाज आगिप्रसव
 मदस्ययययययव माधुन्दिनिमायवाडिसनेवन नायश ॥ श्री ३ यथ

नाम । आमसमीर्दका । अरिवादयामि ॥ ॐ श्री ३ गित्यवनावायव
 रुहावका अदमा अन्तःश्रवणरुहावकावदमि ॥ श्री ३ अविमल्लिक अव रुहाव
 कस्य अर्दका अरिवादयामि ॥ श्री ३ धर्मेकस्यव रुहावकावका अर्दका अ
 दिवादयामि ॥ श्री ३ मानस्यवीर्यवृद्धवनी रुहावकावका अर्दका अरि
 वादयामि ॥ श्री ३ गित्यवनावायव रुहावकावका अर्दका अरिवादयामि ॥ श्री ३
 यक्षमि रुहावकावका अर्दका अरिवादयामि ॥ श्री ३ मलिकुमानवरुहा
 श्री ३ मानस्यवना ॥ ३ शक्तिगानाहा ॥ नाट्यव

ॐ नमो ब्रह्मणे नमः ॥ गंगा वह्नि नित्यं त्वां विधिलिखन् ॥ ॥ कथं कथं न
यु काल्यया नित्यं ॥ ॐ यु काल्यया नित्यं ॥ ॐ कथं यु काल्य दत्तं यु काल्य ॥ ॐ
यवीतकी वद्धं ॥ की कृता वद्धं ॥ आदम्य ॥ ॥ मंगल विद्युय ॥ ॐ वृक्ष यज्ञं ॥
ॐ ॐ दं विष्णु ॥ ॐ नमः सक्त या यय ॥ ॥ डल नमस्कारं कृत्वा ॥ ॐ मारि कुर्म
यु मा कु र्ने मस्तु आ गाना निष्पदि ॥ यत्तु स्य कल्याण वि त्तस्य यथा ॥ ॐ न
क ० रि ना जा वरु ण ॥ य का न सु र्या य मन्थ म न्य न वा ड अ य दया दा ॥ य
॥ न वं क न ना य व का द द या वि द स्वि ० न मा व नु ण या रि सि ता व नु ण स्य

२ शतं बुद्धिमान् आनित्यादि । ४

पा ॥ ३ ॥ ॐ य न शतं व न ॥ य स रु स ॥ य क या पा ॥ वि न ता म दान ॥ ४ ॥ रि
 ना ॥ अ नु स वि ल वि ॥ ५ ॥ म ॥ नि ॥ म न न स ॥ का य ॥ ६ ॥ स्वा हा ॥ ॐ अ ॥ स्व का न न ॥
 का न वि षू का न व ॥ ७ ॥ न ॥ ॐ ॥ न ॥ सि व वा न न ॥ क ॥ न ॥ ६ ॥ न ॥ वा द ॥ न ॥ म ॥ रि
 क ॥ न ॥ म ॥ यो ॥ य ॥ ॐ ॥ न ॥ या द ॥ व ॥ न ॥ क ॥ न ॥ ॥ त्व या रु न ॥ न ॥ या य ॥ न ॥ स ॥ व ॥ या य ॥ य ॥ म ॥
 य ॥ न ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ न ॥ वि षू ॥ ॥ ॐ ॥ अ ॥ क ॥ ॥ ३ ॥ ॥ उ ॥ द ॥ का ॥ अ ॥ नि ॥ व ॥ त्वा ॥
 ॐ ॥ अ ॥ या ॥ अ ॥ त्मा ॥ मा ॥ न ॥ व ॥ ॥ ॐ ॥ ध ॥ य ॥ लु ॥ य ॥ न ॥ न ॥ त ॥ ना ॥ य ॥ म ॥ य ॥ ॥ य ॥ न ॥ न ॥ वि ॥ श्व ॥ ॥ दे ॥ नि ॥ य ॥
 व ॥ रु ॥ नि ॥ दे ॥ वी ॥ नू ॥ दि ॥ वा ॥ त्व ॥ ॥ ॐ ॥ चि ॥ वा ॥ पू ॥ न ॥ य ॥ मि ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ म ॥ भ ॥ व ॥ नू ॥ द ॥ ॥ ॐ ॥ न ॥ रु ॥ व ॥ य ॥

[illegible]

प्राद्वत्ति स्यात् ॥ ॐ समिप्रियान आयडाषधयस सुदु स्मिप्रियां नमः ॥
 समिप्रियां नमः ॥ ॐ आयडाषधयस सुदु स्मिप्रियां नमः ॥
 यवदुःखं यावदुःखं भावमस्तु स्वराज्यं तेन ॥ ॐ समिप्रियां नमः ॥
 स्मा अर्चनं मास वायस्य दयायति नमः ॥ आयडा नमः ॥ ॐ ॥ ॥
 नि ॥ ॐ गुम्फक यजामहे ॥ गमयादी न दान्यभा उत ॥ ॐ नमः ॥ ॥
 दुर्वैषां रत्नं दिवस्य धीमहि ॥ प्रियायान ॥ पुत्रादयः ॥ ॥ ॥
 ॐ नमः ॥ गन्धु लिखमा ॥ दहन्तान् कुर्यात् ॥ ॐ नमः ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ विष्णुनामसंकीर्तनम् ॥

महावदुर्मिकायुदान ॥ वद ॥ उं यदहं वदितुं ॥ वदु सर्वो गं मुक्ति कन ॥
 लयु नवाक् ॥ ॥ उं ललाटके गं विद्या कर्म ॥ यामं सदनं क ॥ ७८ ॥ इति ॥
 मयैव वासुद वासुद दयं ददयस्ते दधी कर्म ॥ श्रीवर्द्धना लिमानम ॥ यद ॥
 नार्त्तक निःशेषेव ॥ उं यथाह त्रियादय ॥ कामादव ॥ ७९ ॥ इति ॥
 शचन्द्र समान ॥ ० ॥

[illegible]

ॐ नमो लोका नाथाय त्रास्तु स्वायत्तमय मरुय कनसर्वतोऽसम्पूर्ण चन्द्रवदना मृदु
प्रयत्नन सर्वज्ञानमकृत्व लम्ब किमासः तयद्रया निवेन नू रिवितक्ष्णना
सि॥१॥ इति गीतं सवने पि नकथा नवकुं शनकाटली हिमस्तु रवानमिवाग्नुदकः वृद्ध धर्मे सुति
रम प्रनष्ट वाक्कीः तप मया लि म्द वनलस्वन नमामा ॥२॥ नमो नाथे न कन कनत
विहृषिता ग नय नय जत विहृषिता वानचन्द्र कृष्णाङ्गिता वन धे नाय सुवर्णा त
पद्मपाणि म्दुग्धदयनमामा ॥३॥ तन्ना कनाथ मवला कित्तता म धर्य यक्षा पवितगत
चक्षुः सत्यवाङ्मा विनामनिष्ठ वनकु पुनष्ट वगानुः तयद्रया नि सुति मुर्व कृतत

मामा गाना नक्षानना सिवन हृषिता सर्वसत्वा ससान्वयक सिनानवमर्गसत्त्व ॥४॥ द्रा
ला कित्त पथ मनुज वाधिमागः तयमया लि वनमो गतदण्डनमामा ॥५॥ गत्व यननरक
पृथु विचित्रमर्गन सिति कित्ताद्द विसानलर हंस पद्मा ॥६॥ ताना किस कन इरव विता स
यन्ता तयद्रया नि नन को निस मयनमामि ॥७॥ र्शना सर्यन्ता जस पाल कार्गर्तु म
॥८॥ धर्ममज मिह गगत काम नू पि ॥९॥ अक म्मेतु सिव धृषिता निमिडा तयद्रया निरुत
सा सतन्त्रमामा ॥१०॥ गत्वोचय नवक यमना देनाय गे लोका नाथ मरुय कन कच
सत्वा इरवा लू यतव सुना मि विमुक्ती इरवा तयद्रया निरुत कव विषत नमा
मा ॥११॥ तन्ना लोका गत यक नूता वसनः षुचि मूर्ख उन्नय पर्वताङ्गितमर्गः

कृष्णशवरुयपिदितपुनसताः तपद्रुपादिनृषनागकननमामी ॥ ११ ॥ अनात्यरुद्ररुद्र
दितपुनसन्ताः सपिथगकवलुरुसवत्यनदिशि युद्धागविनरुततुद्ररु रवागुनागः
नपद्रुपानिरुततुद्ररु रवानमामी ॥ १० ॥ गत्वाचडोवतडितचन्द्रमुद्रोः विनामति
आलितः वलपुरुसिः गडकनाडि सगान्यचवतनमसा गपद्रुपानितमरुठनेन
तुलनमामी ॥ ९ ॥ गत्वाचडनवलिरुगमनानसथसडादियरुल मन्नुययिषुपा
नोपमकधनपलितयुतादानव्यगः तपद्रुपानिवलधमरुद्रुनमामी ॥ ८ ॥ ग
त्वाचडनदिविर्कणुलेद वपुर्गदतशहिमनदपादितइविववः तपचैतमियत

लिङ्गसुदिवतः तपद्रुपालि धनरुषिकनमामी ॥ ७ ॥ गकौमनूपमपद
सितगकसि रिः कामस्यनचालित धमसिनाडसि रिः द्यातस्यचिदुयविवव्यगस
जित्वाचिनुः तपद्रुपालि वद्रुनूपधर्यनमामी ॥ ६ ॥ विगमि ननुकमिकाति
समूद्रवनिः गत्वाचडनपुलिरुपमनुस्मनानानि ग्यावित द्यूनद्युनायद्रुलि
धमः तपद्रुनिवद्रुगस धननमामी ॥ ५ ॥ इतिद्रुमागदपिसालिरुवधु
यदिः द्रोहपुद्रवरुयपिदिगसर्वसखाः धन्यादिद्रुकावद्रुविषिसमदिवरु
तपद्रुपालि वनकानुतिर्कनमामी ॥ ४ ॥ वाजानरुस्वकृतद्रुपमहाधवक

उत्तरीं जनवनि डाम्भय वक्रसिद्धि ॥ आशिर्भूतं पवनवर्गं महासूक्तं तं यद्वापानि ॥
जितुं स कुरुयन्नमामी ॥ ११ ॥ ख्यं वै उक्तं तव स्मना मिमी स कुरुदः ख्यं नाना समाधि यवि
प्रसू विविधमर्गः नैलायक पनिसका अनकसत्वा तव प्रयागि ज्ञयना सक
नन्वमामी ॥ १२ ॥ तौ नारायण किं नवता समो स्मवका वाजस लुन्ड रुय वा कस था ज
नुता नद्यापि मा ग्न रुतान्त चाग्राह (०५) तं यद्वापानि अकुरुय नददन्त मामी ॥
॥ १३ ॥ व्याघ्रा रुय रवद्वपि गवसे दकिंतिना आयसा योषि वद कृष्ण नि
यागोद इरिवे ग स्वकृ स वद आयदना सयन्ती नये प्रयागि रुयना सकनन्

मामी ॥ १४ ॥ अमुक्ता वृमिलिय श्रव मी प्रमीय प सज्जम कता पिडित नि
दय वक्रचालि ॥ सर्वपन सगिज शवनर्ण स्यव कायः तं यद्वापानि वक्रडायक
नन्वमामी ॥ १५ ॥ नार्यव (०६) गमु धि नया गूलख नाताहु मति ल कच स्य क यानि
जाति नस्मा तदा गद पि स्वापद सा वतानिः तं यद्वापानि नीनय प्रददन्त मामी ॥
॥ १६ ॥ दवे के वन वत्र (०७) सज्जम वदित स गन्ध वज्र मुनि डानव लीत स्य
नाक सनाग म नूक पुन नमस्कृत म य लुताय साच गत्र दन मस्कृत म ॥ १७ ॥
उत्तरीं कना रुव नित्य कावन ॥ ०८ ॥ इति वृष्टि पृष्टि य पेन वृष्टि पुन व को

मन्त्रं पूजितं आयुर्वीरुतिरुतावलसेद्व्यविसानरागा॥ मन्त्रं ह्येकं कर्म पिपासां निला
कनार्थं नाशं ॥ सै कं लीयनी रतवविच्ये मालानरावनातादिवाचतवनामन
इस्मनको न इस्वप्रयविद्युत्तयपापविनासयन्ता उद्धृतिदवसनतर्तं वनद्वय
यन्ति ॥ १० ॥ ॥ पूजितं रोगवतं ह्य ॥ आयुर्विलाकिम ह्यवस्य ॥ कनूनी सुव
वतात ॥ समाफ ॥ ॥ ॥ गारुडं नमाला कनाथाय ॥ ॥ सर्वं तु तमनि
कम्पीत उच्य ॥ दानिर्मवचनितनवयुर्व ॥ सर्वं नृपवलदिव्यगुन्य ॥ वन
मासिदसववचन्य ॥ ॥ ॥ गाराथासिखिमृष्टा ॥ कर्णं काकिनायसि

खिद्ये व्यञ्जुकर्णं न निष्प्रनिर्भमृद्वृक्षितकर्णं तन्मामिदं ववक ॥
॥ १ ॥ सैखकुलुकमृदमीमलालु ॥ जन्मदः खविगतं विमलालु ॥ लागशा
मृधर्तं विमलालु ॥ तन्मामिदसववनलालु ॥ ॥ १ ॥ पुलुचदइति शीतितवकुं स
वैद्वमलितासलवकुं वृद्धपकीजिनरासलवकुं तन्मामिदं ववनवकुं
॥ ॥ नस्मासहस्रविचिगुमृष्टा ॥ पुस्यववसतपुजितमृष्टा ॥ नत्तववषातद्रो
तमृष्टा ॥ तन्मामिदं ववनमृष्टा ॥ ॥ ॥ नयवताकविलम्बितशा ॥
कश्चनं नृगवलापितशीर्षं नयविगतं सैसासितशीर्षं तन्मामिदं ववन

मत्तारुचवाहृतन्नमामादसवववलवाहा ॥ १३ ॥ चामैवचक्रविह्वविगहसकं विमल
 डकामलपकजहसुतप्रतसेननागतहसकं नन्नमामीदणवनवलहसकं ॥ १४ ॥
 जागरषेखतनवजिगेविनु ॥ जिनक्षनजमरुविगविनु ॥ कल्पकातिसूमनाहनचि
 तु ॥ तन्नमामादणवनवलविल ॥ १५ ॥ यद्वनारुसुसाहितनारु ॥ यद्वथानि सुरुनि
 मूलनारु ॥ वद्वथानि हूरुसाहितनारु ॥ नन्नमामिदणवनवलनारु ॥ १६ ॥
 लक्षनचक्रविनुषिगपाद ॥ अकृष्टकीविलाजितपाद ॥ नागकुक्षगणवन्दीत
 पाद ॥ नन्नमामादणवनवलपाद ॥ १७ ॥ हाससुसकबाइनिलाजितपाद ॥ दवदानव

वेजाजितपाद ॥ सर्वदवगानपुजितपाद ॥ तन्नमामादणवनवेपाद ॥ १८ ॥ सर्वदिवग
 नपुपुजितगार्ध ॥ सूच्यकातिसेमरावितगार्ध ॥ दिवाद्वालेकलितगार्ध ॥ पितगार्ध
 गन्नमामादणवनवलगार्ध ॥ १९ ॥ पुष्पधूपगदधुजितगार्ध ॥ गन्धपुष्पगदधु
 जितगार्ध ॥ मानावरुगवपुजितगार्ध ॥ तन्नमामादणवनवलगार्ध ॥ २० ॥ जिह्व
 नेधमेस्वामिगिरवस्वगने ॥ संक्रुगगदितनन्नकुगादिमकुगादिरियुक्तनिसग
 टपथ ॥ नि ॥ यनसुगतस्ववपुकेथन ॥ नरुवतिगनमादसुपधममनरागामद
 यीवलाकगववसु ॥ नृपसुवगाग ॥ यतिसमाफ ॥

॥ २१ ॥

१०० नमोलाकनाथायः शादाविडर्पकलनस्य ॥ नमोलाकनाथायः शादाविडर्पकलनस्य ॥ पुनिकान
ससुत्वारवु ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ १ ॥ निधिनागभनप्रविष्टाहं ॥ अनाथइववडा
नवधेवर ॥ गजिगार्ह ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ २ ॥ मातापिसु ॥ गजिनिधुव
पूगडालसुह्रमा ॥ ३ ॥ गालमायाद्वय ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ ४ ॥ यत्तयापलि
जनस्याथ ॥ सुसुर्गकमईइसुर्त ॥ ५ ॥ काकीत्यनपस्यामि ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ ६ ॥
॥ ७ ॥ जिगुनाकासमाइव ॥ माहासागवलद्यभ ॥ इवद्यधुमयाद्वय ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ ८ ॥
गर्ग ॥ ९ ॥ जिगुकेपमाहाद्याल ॥ अनगहिसागलखव ॥ अवहतावयनाथ ॥ ग

हिमाहसुत्थभग ॥ १० ॥ वेम्मावेर्मनविहंग ॥ गम्मागमादावेदिता ॥ अवतनपिदकां
गहिमाहसुत्थभग ॥ ११ ॥ माहद्यातपिगद्यार्ग ॥ पचान ॥ पुयम्यकूर्त ॥ पस्यामिति
वेद्यार्ग ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ १२ ॥ कतमयाव ॥ अयुरुदे ॥ साधिकाथविस्वागित
मयासुत्वाहिसाचान ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ हलीकसुह्रनापि ॥ पललाकन
जागिति ॥ वदितकर्मसुत्यननग ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ कास्यपुप्यजथाका
स ॥ समननावायुनरुत ॥ १७ ॥ सिंजिवयुता ॥ गहिमाहसुत्थभग ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥
अदवाकळकस्थव ॥ वरुविषनिनाय ॥ पिधगणनपस्यामि ॥ गहिमाह

वमनूष्यात्तच गतीनां तिर्यग्ननकं प्रगतामां सत्त्वा यानि वसन्ति सदा
सिगानिति तवमयिकाश्च तातानमभापनिष्टकाकरद्वारं विनेष्टाविवेगता
चुल्लं ॐति ॐ लूरु गवन रुवतिनामि यावननकं नमविष्टा
किं वा यथैकवापि पनर्थं मष्टु सिरुगवन्मासकुता र्थं अथव
यातव पूल्यं जनयसि दृष्टः कथमविष्टुनं ॥ १॥ स
वसिपनिउष्टः कथयसि कलू र्थं किमिष्टिनदृष्टः ॥ २॥
सिगदकः कथयमाकाकमासि हुनदः ॥ १०॥ दकिउव

कमकांठ कवन्मविचिर्ग मासास्ते लिना इष्टकाप
दृष्टं मननं ॥ ११॥ अष्टन गटिका पाइक सिद्धिः सि
न विष्टुद्धिः सिद्धिः सिद्धिः सिद्धिः सिद्धिः सिद्धिः सिद्धिः
यकरचन विलाचनहीना विविधे व्यापिमहा रुय दीना
उष्टं पूष्टं लनीना विलसन्तु क आगुल गम्हीना ॥ १३॥ गन
गुरुजकिन्यः ॐ निया नि सदाया गित्यः सवतिमगुस्य धानाग
धीगायस्य त्वं जिनः ॥ १४॥ ॐ तिला के ध्वन कि प्रिय मागी

...मानसु...
...यितु...
...यितु...
...यितु...
...यितु...
...यितु...
...यितु...
...यितु...

यसिङ्ग ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
नमस्तुते ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
य ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
वाङ्मये यं दगी का र्कं ॥ सुवाङ्मये यं दगी का र्कं ॥ सुवाङ्मये यं दगी का र्कं ॥
लंघनहाय ॥ विष्णुदेव विष्णुलये कं सुलाहाय सुलंघनहाय ॥
ते ॥ सुवाङ्मये यं दगी का र्कं ॥ सुवाङ्मये यं दगी का र्कं ॥ सुवाङ्मये यं दगी का र्कं ॥

नमस्तुते ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
ये ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
लीनकुमिवाम्ना ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
नमस्तुते ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
कामहं कलिं ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥
विष्णुदेव ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥ ॐ ह्रूमी ग या ध्या ॥

चित्रयात्रायावाकनसत्राहाथसखाना॥ अम्हावम्हा॥ २७
कोदशाकडे॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

वृषधामनेन शकास्य यत्तु ज्ञानं तस्य यितन रुथानाम्
यितनमह रुथानाम् ययितनमह रुथानाम् यितन लोद ५१ः तव
सावकुलीक ५२ः इन्द्रावाहि के आवाहय ॥ ५३ः अकुली
हाम लवान् यत्तु इन्द्रावाहि के आवाहय ॥ ५४ः अकुली
यितन यत्तु इन्द्रावाहि के आवाहय ॥ ५५ः अकुली
माआति ५६ः यत्तु इन्द्रावाहि के आवाहय ॥ ५७ः अकुली

बुवा सुखे सेक नन ॥ विशदव हक नन ॥ यित नय क सुके नन ॥ उ वृ
इय धन न ॥ विशदव हक नन ॥ यित नय क सुके नन ॥ उ वृ
दडा साम्ब कृली क साई ॥ उ था दी ये मान ॥ रु ले न न स क ये ॥ यि
नन यिता मह यिता मह ॥ उ रु मान ॥ यित नन ॥ उ वृ
व कृली क साई ॥ उ था दी ये मान ॥ रु ले न न स क ये ॥ यि
इयु व क ॥ उ न स क य वि ॥ य ॥ स र्व ॥ य वि य ॥ म ॥ सु ॥ स्थान न
न ॥ उ न स क य ॥ उ वि ॥ उ म ॥ सु ॥ ल ॥ सु ॥ इ य ॥ ध न ॥ ल ॥ हा थ ॥ स

॥ न न न सा ॥ उ था दी ये मान ॥ रु ले न न स क ये ॥ यि
धाय ॥ उ न स क य वि ॥ य ॥ स र्व ॥ य वि य ॥ म ॥ सु ॥ स्थान न
ली का ॥ उ न स क य वि ॥ य ॥ स र्व ॥ य वि य ॥ म ॥ सु ॥ स्थान न
न न व ॥ य ॥ उ ॥ य ॥ य ॥ स वि ग न य ॥ उ ॥ क ॥ न ॥ स र्व ॥ य वि य ॥ म ॥ सु ॥ स्थान न
या य ॥ यित नन ॥ यि ग स न ॥ स्व धा ॥ यिता मह यि ॥ ग स न ॥ स्व धा ॥ य वि य ॥ म ॥ सु ॥ स्थान न
मह यि ॥ ग स न ॥ स्व धा ॥ स ॥ स काल ही न वान वि ग न यि ॥ य ॥ म ॥ सु ॥ स्थान न

इयतिस्त्रिंशत् ॥ याता सुनव ॥ कोता न गार्थी ॥ थरु कोता यावत् ॥
शास्त्रं ॥ डोव कामना याडाव कोता न डोव कोता न आदाव यसां
याव संयत्तं धाय यम ॥ सुसंयत्तं धाय वाक्कन स्या ॥ कोता न लाहा
तसियाव यकुय ॥ डं अंतर्जं वक्क गगनि कीन सयिं ॥ गतं डं लाड
विमयुति न संडुर्क मरुं गायि ॥ थरु संरुव ॥ यिं ॥ मरुं कलि के ॥
डं मात न धाय ॥ डं डं रुष वाक्कन स्या धाय ॥ कुं ॥ अं ॥ डं सिता याव
यिं ॥ वाग था वा सुद्धि वा कायाव विगन ॥ थ ॥ डं थि हव सुमता

येन मातृव सत ॥ थेव वगुं सु सुनव वधुनां अयान वधि वा सु
ता अं मे कुलं त्रय यिं ॥ थ ॥ यरु दान विवर्जिता ॥ क्रिया प्रायग
नाय वडा सुं था य क व सु था ॥ विरूया आमग कोव डुता डु
त कुलं मम ॥ न था यिं ॥ म यो ड हं म कोय मयेति स्त्रिंशत् ॥
सं स काल हीन वान विगनः ॥ १ ॥ न विगन यिं ॥ मयति स्त्रिं
शत् ॥ ति लोड क यिं ॥ मयति स्त्रिंशत् ॥ थ ॥ व डने ॥ य व ॥

[illegible]

१५ बवपितरविठयूष्यं वधं ॥ यितामहं ययितामहं ययं
इ ॥ लंकां वा यथावत् करवादिथं स्वर्गं ॥ कला लंका
हातसियं रागयाथ ॥ यितरराग ॥ यितामहं राग ॥ ययिता
महं राग ॥ थाडाकुशं हामलं कौमोत्रं वा ॥ गमलं वनं
लादकवियं ॥ का स्यात् ॥ यितरराग ॥ ययितामहं ययं
लादक ॥ वकुलीकं शर्द्धं तिलादकं यिं दार्द्यं स्व ॥ ॥

यितनः यितामहः ययितामह थ थं इ ॥ द्वा द्वा लतं दानं न रुह
अथ थय रुह लक्ष लतं ॥ अभा व सुखा र्थ का द्वा रुडं रुह
दा द्वा आदि म् रुह यथ सुखा यितनं यिंद वं दनं स्वखा यिता
तामह ययितामह थ थं इ ॥ यितनं यिंद यिंद वा सनं स्वखा यि
तामह यिंद वा सनं स्वखा ययितामह यिंद यिंद वा सनं स्वखा ॥
सं सकान दानवान विज्ञान न रुह विज्ञान यिंद वा सनं उयति मि

ता ॥ द्वा द्वा मका वत रु द्वा वतं सु थ द्वा वतं ॥ यितनं यिंद यथ
स्वखा ॥ यितामह ययितामह थ थं इ ॥ यितनं यिंद रु ल रु दनं
स्वखा ॥ यितामह ययितामह रु ल रु दनं स्वखा ॥ धूय दीय रु
लयु धाता वान या य ॥ यितनं रु था ता मि रु द्वा मात सा यितनं
३३॥ सां व रु नी क सा इ रु ल यु धाता वान धूय दीय सं क
ल्य स्वखा ॥ मणु न या य ॥ सान द्वा वा द्वा य ता न या य ॥ का

सुखः ॥ अथ विन नरु थाना नि यिता मरुतु थाना नि य यिता मरुतु
थाना नि यिता मरुतु ॥ सा वि कु गी क इ म ड ॥ यिता यिता मरुतु ॥ अत
तः ॥ ये व ये यिता मरुतु ॥ किं य या नि वि उ त म या ड रु न रु त यि
त ना व सु वा ॥ ठा या रु डा ॥ अत यिता मरुतु यिता मरुतु थाना नि
या ॥ अत ही न य क मरुता मरुतु ही न को या ही न रु क ही न तथे
वे व रु ड मरुतु सर्व सु य ल न मरुतु यिता ड व ना अरु गी ध य सु व व द
य अरु त इ य ने वि ॥ व सर्व य नि य ल मरुतु ॥ वि मरुतु व ड ॥ अत रु व

न ला हा थ न लं व य सा लं ॥ सु या रु त मरुतु दी व मा य रु त मरुतु अत
कु नि न ॥ अति वा आ य रु त लं व रु त रु थ ॥ थ थं अ इ वा अरु मरुतु व न
न सा न ॥ स्वा न ना म वि य ॥ य वी व ल अ ल अ व स ति य रु क न ल
अ व स रं स दा ॥ अ म र्थ सा म न सा स दा मरुतु म ॥ अ रु त ॥ अ रु त वा
मरुतु म य रु त सा ति य रु क वृ ति इ व म ॥ रु ड मरुतु य रु क लं लो क रु ड डी
स दा न व सा म सा म न सा अ रु त या अ रु त वा वि मरुतु ॥ अ रु त व रु

[illegible]

नाममुमः। अन्त्यः। नावद्वरुवन्। धृतिनीवावलक्ष्यमहिजा
 विज्ञानसुन्दमायाककथंवन॥। एतावाविषसुन्दइयदानावहु
 यदानांसातिरुनयाष्टिम्बस्वधावावयिकेवाविताभादीवाय
 नदाश्चनदश्यविष्णुतिनियदानिव॥। एतवायुयश्चिवानादीद्यमा
 यन्वायुयात्॥। सातिरुव॥। वसुहावलक्ष्यनयिउसहाय॥। लायं
 न्यावयष्टिमम॥। यमहाय॥। स्वधावावयिकेवावितायितनवि
 ५॥। स्वः। वितायितामहयिउस्वः। वितायितामहयि

पु. ख. २५॥ विता ॥ ५॥ डाक शहाम लुवान यि पु. श. दात गाव कां अदक
निन लुषन डे यहायक ॥ यियं तां ते सखधा अम सखा लिमानह
यं थड ॥ यित लयितामह ॥ ययिनामह ॥ अ. को. तुय किं ति. कतो. स
याम्बलं स लुय ॥ कता न कथा सां न ॥ खान तं डाव कता न थं स न या
य के ॥ उ. थान या तु कला ॥ न. था. सकिंद कना दान ॥ इकिना विय ॥
वि. स. इ. व. सा. अ. ॥ न. व. खान न. द. व. सा. यित न. डा. सा. व. कला. क.
सा. इ. यि. पु. दान यति स्का थं रु. था. सडा दकि ॥ ५॥ तु. स. महं स. य.

इ. इ. ॥ यित न. य. इ. इ. कना. व. थं ॥ वा. य. न. क. य. ल. वि.
पु. डा. व. य. ॥ यित न. यितामह ॥ ययितामह ॥ सा. इ. क. स. व. ॥
न. गो. ग. वा. व. न. ॥ उ. न. डा. रु. डा. सु. म. ना. सु. स. न. सु. म. न. ॥ सु. न. वि.
क. यि. ना. दि. य. व. ॥ ग. मा. गु. के. सा. ॥ उ. द. मा. स. न. न. म. अ. क. यि. ला. दि.
य. अ. ॥ ग. मा. गु. के. सा. ॥ उ. द. आ. वा. हि. के. आ. वा. ह. य. ॥ उ. न. डा.
य. ॥ रु. डा. य. ॥ सु. म. न. ॥ सु. सि. ना. य. ॥ सु. रु. ॥ क. यि. ना. दि. य.

क२ गमागके रूपा ॥ वननरुद्रम ॥ स्यान्नासा ॥ धूयदीय ॥
 रुल् युव्य ॥ गविवायये ॥ गो ॥ उगवनमके ॥ वनमके ॥
 उर्वदितावनसिस्कन विस्वानिग्नरुद्रं नितान्कयिनहनेम
 यायर्द्रमयाइस्कनं कर्तुं ॥ मयेहेतेनेये ॥ गवाममागते ॥ नि
 त्पंगवायुश्च निदेहिमगवाभिहृदयवायिगवामध्ववसांमि
 हं सनहादीरुगत्मातादेवानां मयिइल्लरु अमृतं मथनेय

[illegible]

वसुविठयूयुयं ॥ ॥ नता अरुि सव ॥ उं रु दि कु सिमहा
राग सवेती थीमहावना ॥ वाक्कन स्य कल नता तोय सिम
सिधप्रिण ॥ वत ॥ रुद दि के ति ॥ आशा वीर ॥ उं कु वा सि ॥
उं रु ॥ ह वि ॥ यित न यि ॥ अ को गु य ति ॥ यिता मह यि ॥ अ को
गु य ति ॥ य यिता मह यि ॥ अ को गु प ति ॥ यित यिता मह यि ॥
तामह सु या तम म ॥ वि स्व दे व वे स्वा न न द व सु या तम म ॥
मि न ह ॥ त के ॥ न न रु डा अ रु ग मा ग ॥ ग मा ग ॥ स त य व ल ॥

य ॥ यि ॥ उ था य य स्व ॥ रु रु मा न ध य ॥ उ था य या मि ॥ ह
क न स य ॥ यि ॥ उ था य ॥ उं स क वा ध न स न न ॥ ग
का न व ना गि र ॥ व क वा का स न दी ये हं सा स न स मा नि का ॥
न वि ज्ञा त क ल ॥ के गे वा क्क न वि द या त्रि का य न स्ति ता य य
म ॥ न य य न ॥ य शा द न ॥ ग या र्ग यि ॥ नू ये न स्व ये म
न न ना न ॥ व द सा य ॥ री का न ॥ मू य न स न न व य

[illegible]

धनं विश्वा स्वर्गमो कययइति । ययइं किं था नाहा नृना
 ववयितामह ॥ ७॥ यवदिन शवदिन यहा ३३ यवयिता ।
 धम्मसंता नवदिश्व संतिने सकरुभय ॥ नाहा ऊर्ध्व की
 थास्यंते ॥ स्वानतने ॥ यितनयितामह यवयितामह सुयी
 तमम् ॥ ३३ यमं ३३ यवयितामह स्वानतने ॥ ३३ यवयितामह सुयी
 तमम् ॥ ३३ यमं ३३ यवयितामह स्वानतने ॥ ३३ यवयितामह सुयी

या यथा विविधरुपा समा यः ॥ ॥ ॐ रुममः ॥ नमो यातु सा
धनं ॥ विशदवयागः सुननमः ॥ वेद्याननदवयागः सुनन
मः ॥ विशदवयागः अधमद्वैरुत्वा ॥ विशदवयागः अरुके
न ॥ विशदववेद्याननदवयागः ॥ स्थानं ॥ विशदववेद्या
ननदवयेविगुर्कोनमः ॥ लंघनं ॥ अरुकेन ॥ वेत्तुय्येव
॥ विशदववेद्याननदव ॥ इदं आवाकः को आवाहय ॥ वि

शदववेद्याननदव ॥ आह साद्य स्वाहा यति अद्ययागः वि
यः ॥ अथ सवापितियागः साधनं ॥ यिगुयागः सुनन स्वध ॥ वि
तामहयागः सुनन स्वध ॥ यिगु महयागः सुनन स्वध ॥ या
न अरुकेन ॥ यागः अरुकेन ॥ यागः ॥ स्थानं ॥ लं
घनं ॥ यिगुर्कोनमः ॥ लंघनं ॥ अरुकेन ॥ वेत्तुय्येव
यिगुर्कोनमः ॥ इदं आवाकः को आवाहय ॥ यिगुर्कोनमः

घयितामह ॥ हस्तार्थस्वभा यतिज्वलायाः सखाऽसकल
 नाद्वियः ॥ • नीयेत स्वानरुक्रमयुष्य आकृतेन धूपेण
 विस्तेयादवस्था अग्नयेव स्वानरुदवस्था रुक्रमानस्य वि
 त्तादसमाज्वलीकशुद्धि अग्नौ विधुष्य धूपेण आः
 कृदन् अत्रेन विधुष्य सर्वत्रियुक्तं मन्त्रं ॥ नवविधं य
 नैः अयसवास्वभा ॥ १० ॥ विस्तेयः ॥ ११ ॥ तं दत्तं यादृशां

१०

ॐ आप्याय स्वसमन्तविध्यं १ सामवृष्टौ वावाजस्यसंगे ॥ संप्रयया ॥ सि
 समये मुवाजा ४ संवृष्ट्या न्य निमात्रिपाद ॥ आप्यायमानो अग्नौ नाय सामदिवि
 पुवा ० स्यात्कमानिधेय ॥ आप्यायस्वमदि नमसामवि ॥ ११ ॥ वि ० पु रि ४ रु
 वान १ स्वयं धस्तम १ सदावृष्टे ॥ अग्नौ त्सा मनाये मत्यवमावित्सा धस्तम १
 अग्नौ त्वा कामयागिवा ॥ १२ ॥ अग्नौ त्वा निवस्तमवि १ ४ म विनय १ ४ धु धव
 अग्नौ त्वा माय ऊमिथ ॥ अग्नि १ पियपू जामसू का मा त्वा नस्य रुवासा ॥ संप्रय

[illegible][illegible]

२ गदा ॥ नाम
 लये ॥ नृपिनि ॥ ॐ पा
 नानायन ॥ गुरुलक्ष्मी
 शिव ॥ गमकमगक
 धर्मेण ध्वन ॥
 मलिसन्ने केशवा ॥
 शिखननायय ॥
 नमो नमो ॥
 माने ध्वनी ॥
 मणि क्रमान ॥
 धन्यानि ॥
 वृण ॥ ज्ञान
 एव स हि रा वा न्मि ॥
 शि शक्ति ॥
 हनु मेय ॥ ॐ श्री वीन
 शि म ॥ नम ए ज न
 ननु ध्वन ॥
 ककु कु क ध्वनि ॥
 कामादन ॥
 को य ॥
 श्री प्र न न गी यन

जय रुचक ॥ श्री श्री जय नारायण वरुण ॥ पुडा सुखिन ॥ स नु ॥ दश सन
 दया ॥ सुजनका सब पीयूष वरु ॥ अमर यवामाना सगंधास्य निवावा ॥
 ज्ञाय ज्ञाय ॥ वही ध्वनिलक्ष्मी जन धन सक्त गि स नान वृद्धि वरु ॥ ज्ञानमानी नाजु
 चल शिक्ति वमरु ॥ लिपद ध्वन सुस्य दय ॥ धुरी रव वरु ॥ सब सत्ता सुखिन सन्नु ॥ स
 व विधिय विपूर्व मरु ॥ ॥ ज्ञानेन नम ॥ ज्ञानेन दाय स्य पा ॥ यज्ञ नम नम ॥

वक्रान

सदा वरुणः । उत कृत्वा तत्ता वा कर्म मतिरिः सह वार्धिव ॥ इशा
ध्वनमग्रा माः रुमरिता समनतः वृवलि सर्वना का ध्व रुम
मतसमागतं ॥ आ कूलं उज्जय दृक्का ॥ धीवजान पना प्रिकं ।
प्रपदु प्रनभा नाजा वशिष्ठ प्रमुखन द्विजान् । समापान किम
ग्राप्ति ॥ वृहि मा द्विजस रुमः ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ पुजानां
प्रतिन रुमः तस्मिन्निभ कृष्टः पुजा । इदं भाग मसा व्युत्तु

इशका दिकिः सह ॥ तदा स किममनसा साहसं पनमं
रुगु ॥ समादा मधनु दिव्यं दिव्या मूष समन्तिर्न ॥ नथ माव
विर्वेजान् ॥ गगान रुगु मञ्जुल ॥ सपादथा ऊर्ध्वल रुं ॥
असापनी संहितं ॥ बाहिनी वृष्टु मास्तम नाजा दशनथ म
दा ॥ नथ उका केन दिव्यं मनिन त्रिविक्रु खित ॥ तं मय उ
हमि पूकं महाकृष्टु समुद्रिग ॥ दिव्यमाभा मस्तान्नि कि

नीतमृतकलि ॥ विराज सतदा काश द्वितीयः वक्रा सुल-
लाकृष्टे च नीतं यापं सहाला सं निधाति ॥ कृति काश अन-
सिद्धा प्रविष्टा किनला तिणी ॥ दृष्टा दश नथश्चाष्ट तं सैरु
कृति मूर्खः ॥ सहाला सुं धनी दृष्टा सूनासून विमर्षे न ॥ त
सिद्धा न कृपाशो न नीर्दवयन मधुवीत ॥ शनी नृवाय ॥ वा
दृष्टं तव नाञ्जलु पर्वनी पुरुषं कन ॥ दवासून म नृवा

ध्वं सिद्धि विद्या वशायणा ॥ ममावशा किना नाञ्जन कर्म
याष्टु तुर्जगिन ॥ तुष्टि दंत वना अलु तपश्चापी नृध नय ॥
वर्लहृ ति पुपास्यामि स्त्रिकृपाय ननु न ॥ ॥ दश नथवाया ॥
नातिणी रुदमी लातु नय न र्थ स मास न ॥ सनीतः सायना
ः माव व्यावद्वष्टु कर्म दिनी ॥ नावका न स्वसा शो न नाम मि
सु मि मि वल ॥ एव न सुशनीः प्राह वने द ला तु शा श्वति ॥

सं प्राप्ता न दुर्वरा ज्ञा ॥ कृतकृता कुरुर्वत्तदा ॥ ब्राह्मणो वृद्धदक्षि
कं रुविष्मति कदाचन ॥ किं लिखे वा मनीषां तु ॥ पुं श्री
कपिरुविष्मति ॥ नुर्ववर्नं तु शंयाप्य ॥ कुरुशानो ववाथि
व ॥ न ॥ थापनी धनुस्साध ॥ रुक्षार्थं व कृतां उनी ॥ आ वि
सनश्च तिदि वि ॥ न नार्थं विना म क ॥ नाज्ञा दशान थ
मि ॥ श्री ॥ सा रे लि दे म था क नो ॥ ॥ ॥ ॥ न मः कृष्ण प नी

लो म ॥ शिखि कं नि रा म य ॥ न भानी न म म् पा म नी लात्य
ल नी रा म य ॥ न भानि म्मो स दे हा म दी र्घे म्म प व ना म य ॥
न भानि विज्ञाने न गाम ॥ ॥ ॥ द न रु पा नु न ॥ न मः ॥ द न रु
या गाम ॥ कुरुशानो म य दे न म ॥ न भानि दी र्घे म्म ॥ काले द
ष्टि न भानि ॥ न मः ॥ कुरुशानो म य दे न म ॥ न भानि दी र्घे म्म
न भानि दी र्घे म्म ॥ कुरुशानो म य दे न म ॥ न भानि दी र्घे म्म

आम वली मुख नभा सुत ॥ नभा मन्द गति दुर्ग नि सिद्धि ॥
मनभानमः ॥ जगु काम नम सुर्ग रुस्मा गि मन भान सुत ॥
सुत्र पुन नमः सुतु का कथे रुम दा पय ॥ जगु दृष्टि नम
हि सु सर्व त क नभा नमः ॥ नमः का ना गि रुदा म कृता ना
पव धे नमः ॥ नभा मन्द गति दुर्ग भानि श्व ना मन भान सुत ॥
गव सो द श्व द लाम नि र्ग भा ग न ता पय ॥ स्नान य कृ नम

हि सु का षा वा म रु श्व न व ॥ उ श्व द दा सि ना रु क रुका
वै ह न शि कृ ना तु ॥ द वा शु नम नू व्या श्व पशु न कि स नी श
वा ॥ स मा व भा कि तः सर्व ना र्ग म कि स म न न व रु श्व रु
म नू व्या ख अष मः स क ता न काः ॥ ना रु रु का प न कि ह न
व श्व व ली कि ता ॥ द श्व श्व न य न ग माः द्वा वा श्व व रु मा

कथा ॥ रुमावला कि हा भुवि ना सर्व प्राणि मत्त तथा प्रत्य
 दं कुरु भो भो वला ॥ १ ॥ तव सिद्धि व ॥ २ ॥ सर्व सुखा तदा भो
 ने ग्रहा ना ज्ञा म हा व नः ॥ ३ ॥ अष्टवी ति ॥ ४ ॥ नी वा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥
 मा व शा सु नीः ॥ ८ ॥ ९ ॥ नी नू वा य ॥ १० ॥ ११ ॥ न व ना ॥ १२ ॥ सु
 वे ना ने न सु व न ॥ १३ ॥ व र्व सु ति प्र दा स्मा मि ॥ १४ ॥ सु या न घ न
 ल न ॥ १५ ॥ १६ ॥ स न थ उ वा न ॥ १७ ॥ अष्टवी ति ॥ १८ ॥ नी वा

दा न्य न क स्य वि । ॐ वा सु न म नू व्या णां ॥ प ३६ प ३६
 स नी नि णां ॥ ॥ ध नि नू वा वा ॥ अ हा र्थ नू अ हा लि मा ॥ अ
 हा पी ज क वा सि गा ॥ ॥ अ य म सु व र्णं दु र्गं दु र्गं दु र्गं दु र्गं
 ॥ ॥ अ य म सु व र्णं दु र्गं दु र्गं दु र्गं दु र्गं ॥ ॥ अ य म सु व र्णं
 दु र्गं दु र्गं दु र्गं दु र्गं ॥ ॥ अ य म सु व र्णं दु र्गं दु र्गं दु र्गं दु र्गं ॥ ॥